चील भाई,
आकाश बहन

चित्र : सूज़न जेफ़्फ़र्स

हिंदी : विदूषक

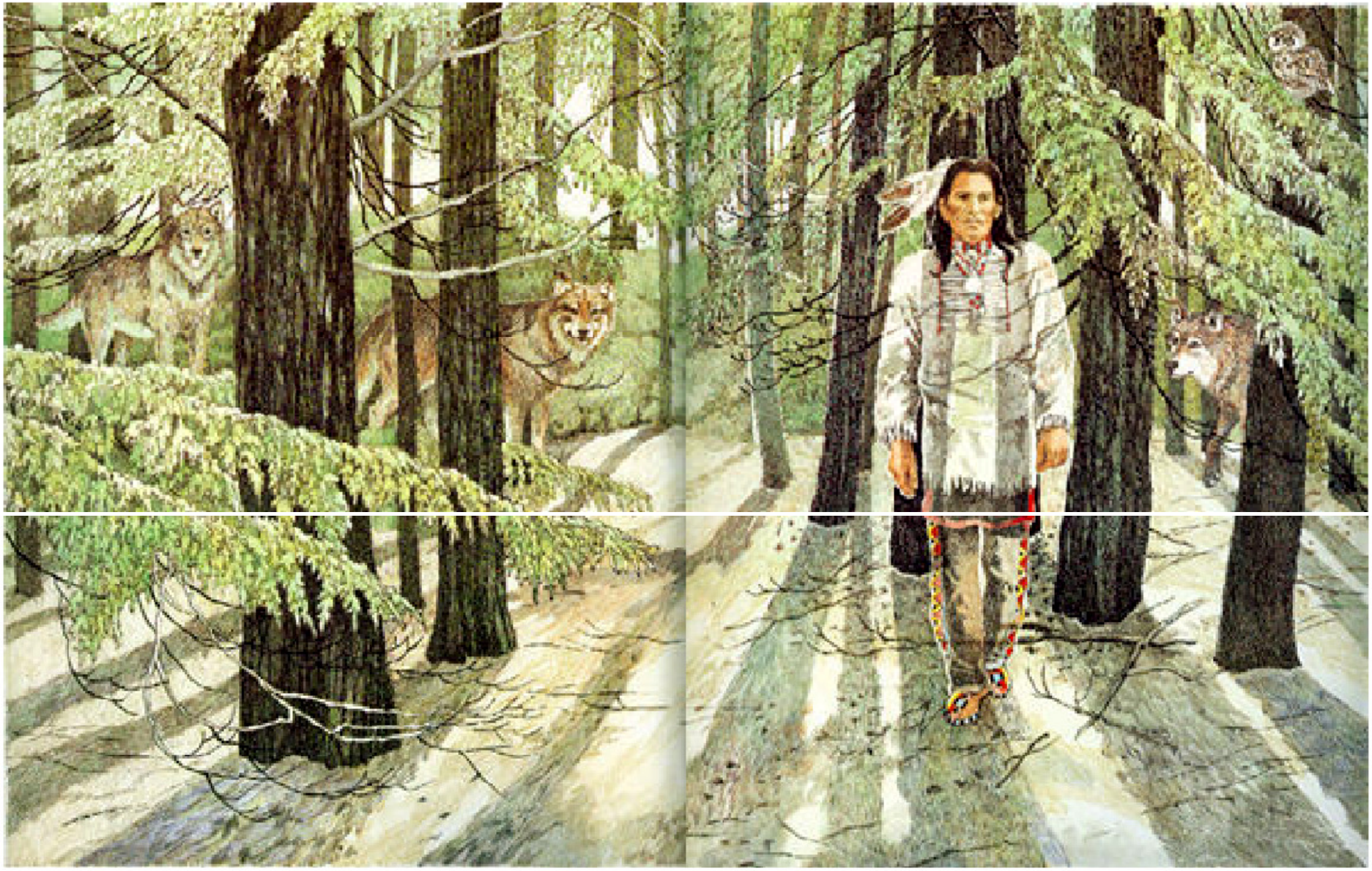

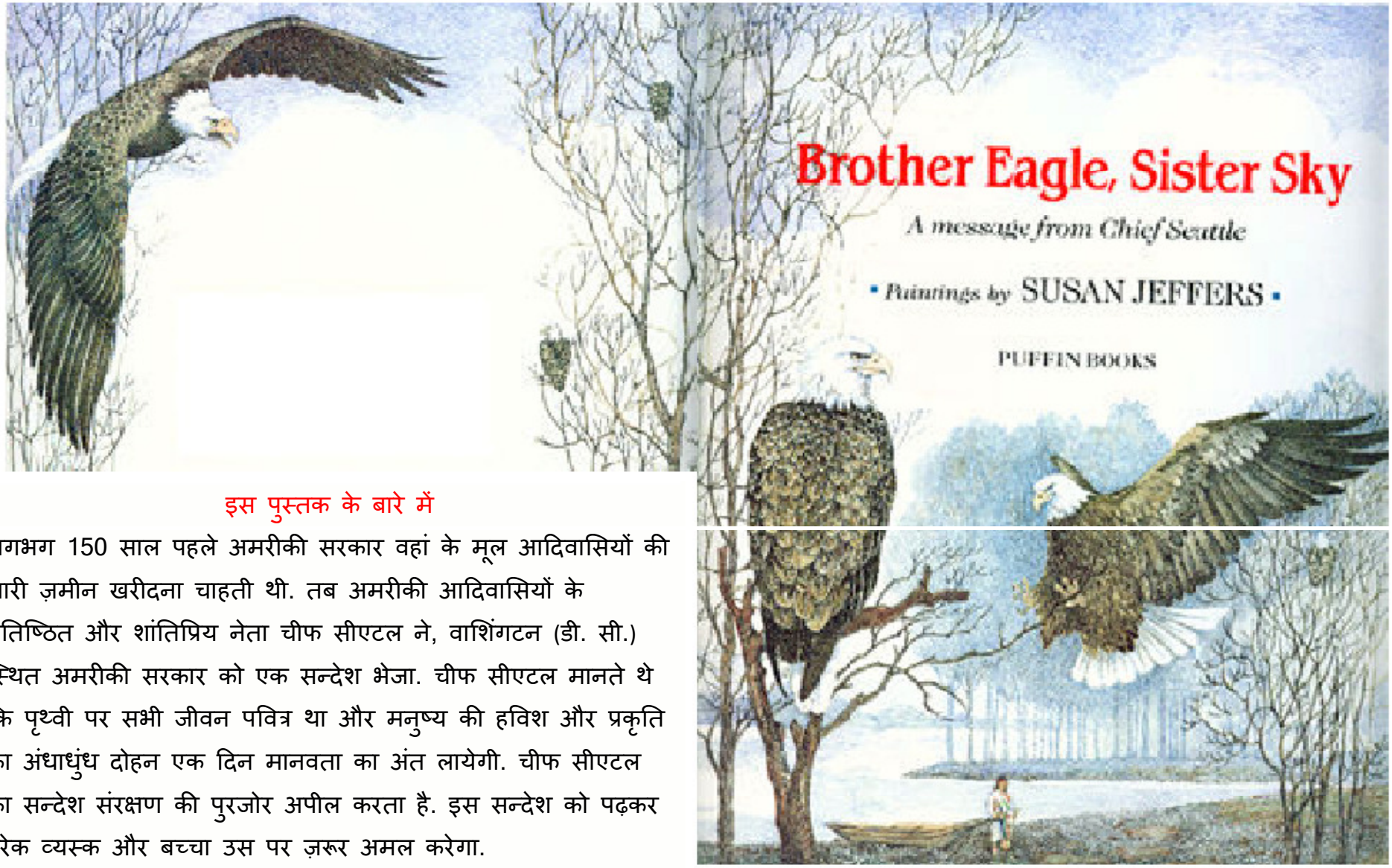

चील भाई, आकाश बहन

चित्र : सूज़न जेफ्फ़र्स

हिंदी : विदुषक

इस पुस्तक के बारे में

लगभग 150 साल पहले अमरीकी सरकार वहां के मूल आदिवासियों की सारी ज़मीन खरीदना चाहती थी. तब अमरीकी आदिवासियों के प्रतिष्ठित और शांतिप्रिय नेता चीफ सीएटल ने, वाशिंगटन (डी. सी.) स्थित अमरीकी सरकार को एक सन्देश भेजा. चीफ सीएटल मानते थे कि पृथ्वी पर सभी जीवन पवित्र था और मनुष्य की हविश और प्रकृति का अंधाधुंध दोहन एक दिन मानवता का अंत लायेगी. चीफ सीएटल का सन्देश संरक्षण की पुरजोर अपील करता है. इस सन्देश को पढ़कर हरेक व्यस्क और बच्चा उस पर ज़रूर अमल करेगा.

“चीफ सीएटल के शब्द सरल और प्रभावशाली हैं. मैं उन्हें पढ़कर द्रवित हुआ. शायद औरों के साथ भी वैसा ही होगा. सूज़न जेफ्फ़र्स के चित्र आप कभी नहीं भूलेंगे.” – वेंडी कोप (डेली टेलीग्राफ)

“किताब के हर पन्ने पर रंगों की निखरी छटा है.” – (अर्ली टाइम्स)

यह बहुत पुरानी बात नहीं है पर जिस मुल्क को आज हम अमरीका कहते हैं वहां के जंगलों और पहाड़ियों में कभी प्राचीन आदिवासी बसते थे. हजारों सालों से उन लोगों की सभ्यता वहां पली-पनपी थी. यह जनजातियाँ बाद में चोक्टाव, चिरोकी, नवाजो, इरोक़ुओइस और सिओउक्स के नाम से जानी गईं. यूरोप से आने की बाद गोरे लोगों ने इन आदिवासी जनजातियों पर एक खूनी युद्ध छेड़ा. फिर एक ही पीढ़ी में गोरों ने आदिवासियों की सारी ज़मीन हथिया ली और मूल आदिवासियों के जिंदा रहने के लिए सिर्फ कुछ चप्पे ही छोड़े. गोरों और जनजातियों के बीच के युद्ध के लगभग अंत में आदिवासियों के महान नेता चीफ सीएटल गोरी सरकार के कमिश्नर के साथ मेज़ पर आमने-सामने बैठे. गोरी सरकार चीफ सीएटल के लोगों की सारी ज़मीन खरीदना चाहती थी.

उस बैठक में चीफ सीएटल ने यह अमर भाषण दिया जो आज भी पर्यावरण संरक्षण पर दुनिया का सबसे उम्दा भाषण माना जाता है. चीफ सीएटल ने अपनी ज़ोरदार आवाज़ में कहा :

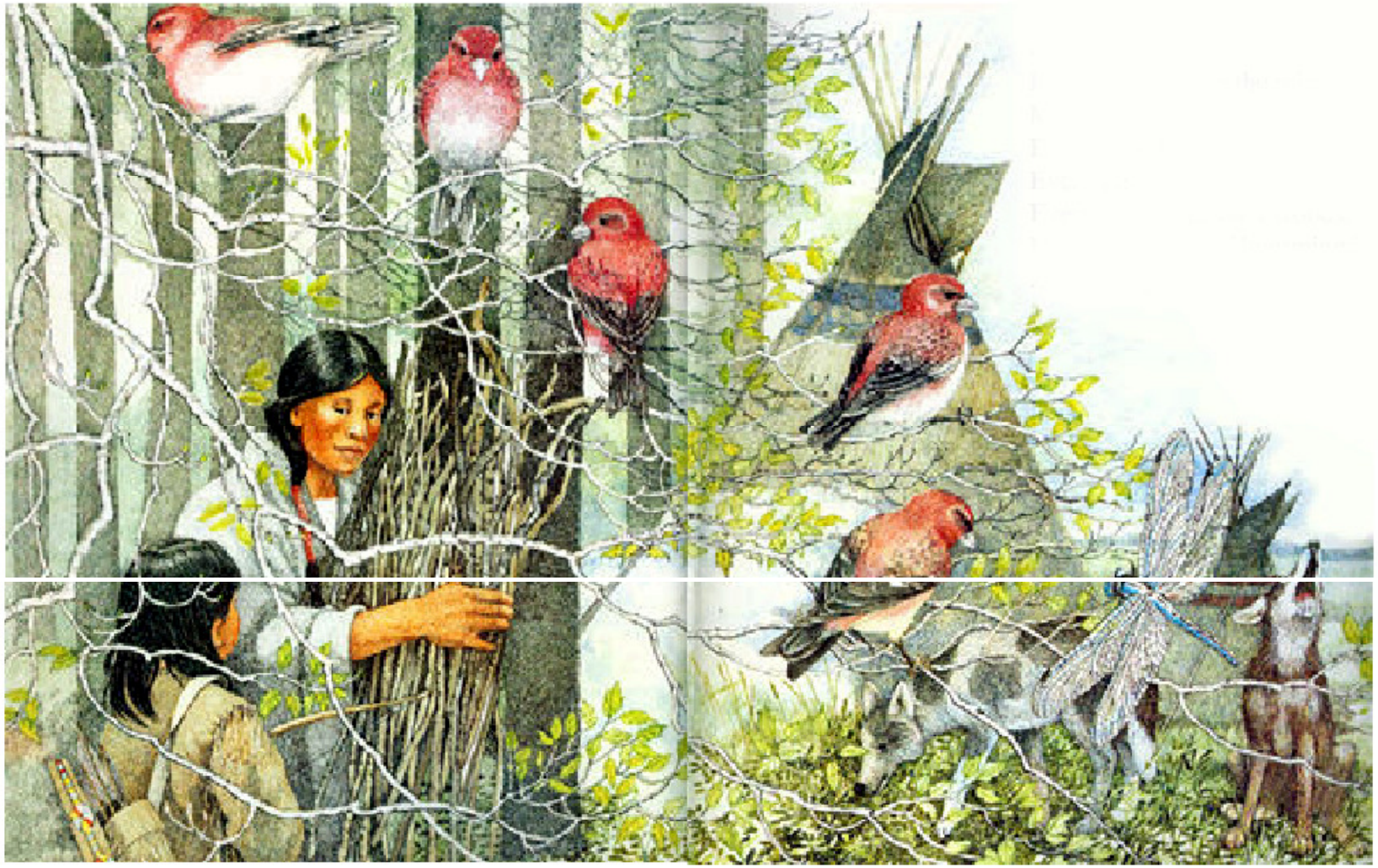

तुम कैसे खरीद सकते हो आसमान को? चीफ सीएटल ने कहा. तुम हवा और पानी के कैसे मालिक बन सकते हो?
मेरी माँ ने मुझ से कहा था, इस ज़मीन का हरेक कतरा मेरे लोगों को पूज्य है.
चीड़ के पेड़ों की एक-एक नोक. हरेक रेतीला तट.
शाम के कोहरे से ढंका हुआ जंगल. घास का मैदान, भौरों का गुंजन.
सभी आदिवासियों के जीवन के लिए पूज्य हैं.

मेरे पिता ने मुझसे कहा था,
पेड़ों की शाखों में बहते हुए रस को मैं अपनी
नसों में बहते हुए खून की तरह जानता हूँ.
हम पृथ्वी का एक हिस्सा हैं,
और यह मिट्टी हमारा ही एक अंश है.
यह सुगन्धित फूल हमारी बहनें हैं.

भालू, हिरण, और महान चील हमारे भाई हैं.

छोटे घोड़े सभी चट्टानों की शिखाएं, ये घास के मैदान, सभी एक परिवार के हैं.

मेरे पूर्वजों की आवाज़ मुझ से कहती है, कि नदियों और झरनों में बहता हुआ यह निर्मल जल, केवल पानी नहीं है - बल्कि मेरे पूर्वजों का लहू है. और झील में झलकती हरेक परछाईं में छिपी है मेरे पूर्वजों के जीवन की यादें और गाथाएं. यह नदियां हमारी मित्र हैं. यह हमारी प्यास बुझाती हैं. इनकी लहरों पर खेलती हैं हमारी छोटी-छोटी नावें, और मिटातीं हैं हमारे बच्चों की भूख और प्यास. इसलिए तुम इन नदियों को उतना ही प्यार और दुलार देना जितना तुम अपने सगे भाई को देते हो.

मेरे दादाजी ने मुझसे कहा था. यह हवा बहुमूल्य है. यह हवा ही सब जीवों का पोषण करती है. और सबके साथ अपनी आत्मा बांटती है. इसी हवा से ही हमारे पुरखों ने ली, अपनी पहली और आखरी सांस. तुम इस ज़मीन और हवा को पवित्र रखना. जिससे कि तुम लोग भी सुगन्धित बयार को अनुभव कर सको और उसका आनंद ले सको.

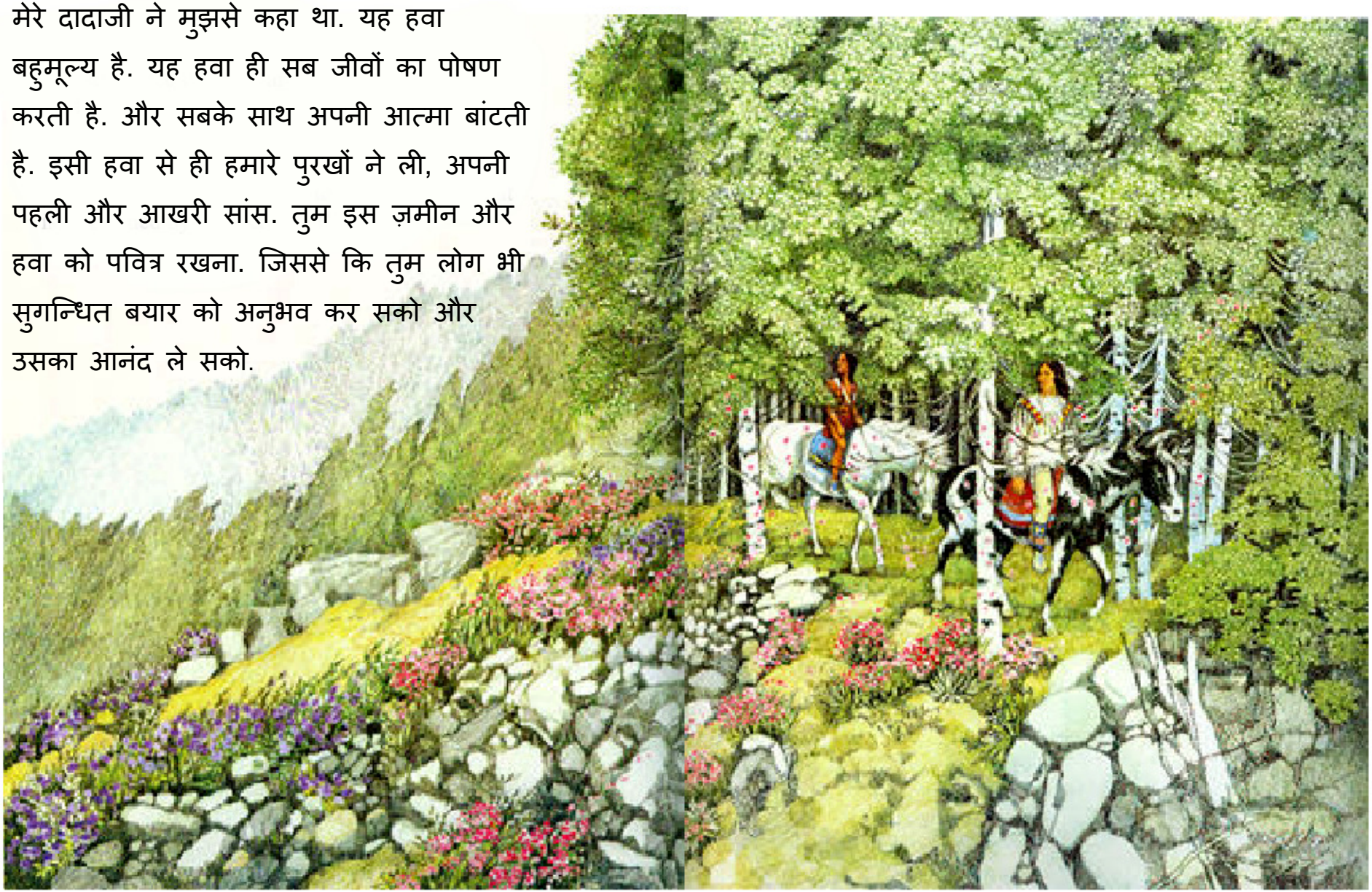

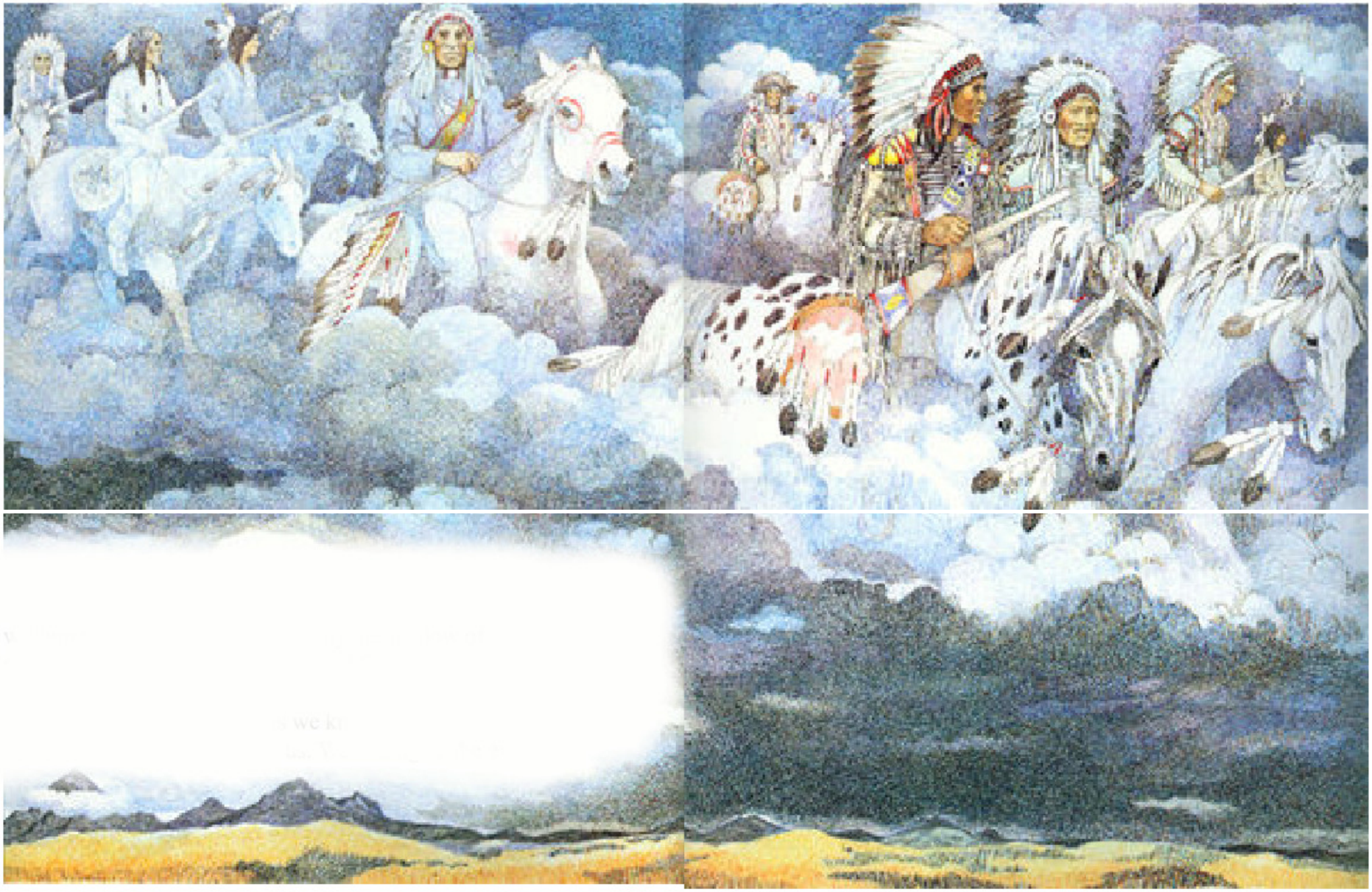

जब आखिरी रेड-इंडियन नर-नारी, जंगली संपदा के साथ लुप्त होंगे, तब हरे मैदान में एक बादल के टुकड़े जैसी उनकी याद धूमिल होकर रह जाएगी. क्या तब तक नदी के तट और जंगल बचे रहेंगे. क्या मेरे लोगों की आत्मा तब तक जिंदा बचेगी?

मेरे पुरखों ने मुझ से कहा था, और यह हम सभी जानते हैं – हम इस धरती के मालिक नहीं हैं. हम इस पृथ्वी का बस एक अंश हैं.

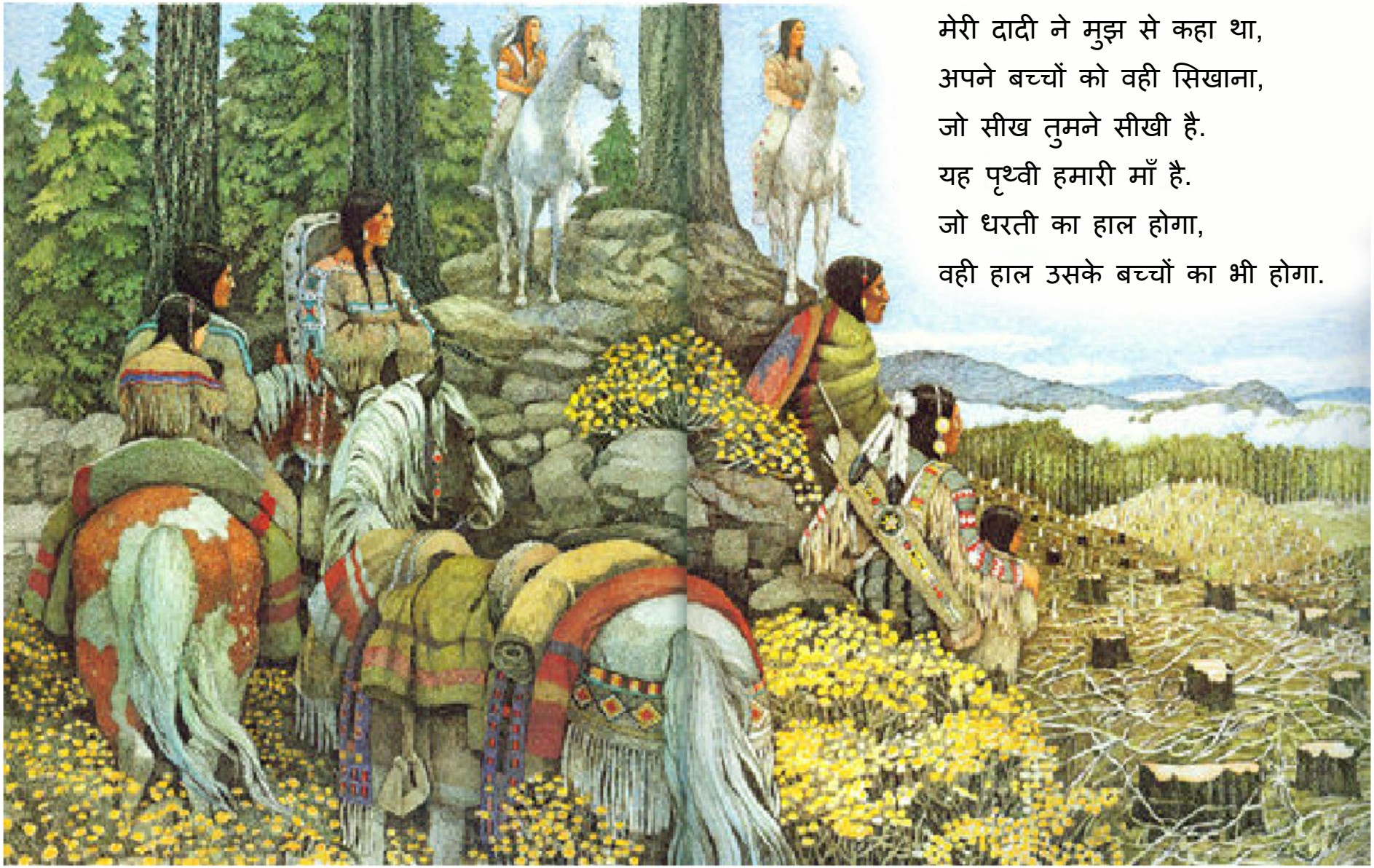

मेरी दादी ने मुझ से कहा था,
अपने बच्चों को वही सिखाना,
जो सीख तुमने सीखी है.
यह पृथ्वी हमारी माँ है.
जो धरती का हाल होगा,
वही हाल उसके बच्चों का भी होगा.

मेरी बात और मेरे पूर्वजों की बातों को ध्यान से सुनो,
चीफ सीएटल ने कहा.
गोरे लोगों की नियति अभी भी मेरे लिए एक रहस्य है.
क्या होगा जब सारे भैंसे क़त्ल कर दिए जायेंगे?
और सारे जंगली घोड़े पालतू बना लिए जायेंगे?
क्या होगा जब जंगल के हरेक कोने को इंसान अपने
पैरों तले रौंद डालेगा?
जब पहाड़ों का सुन्दर दृश्य ढँक जायेगा, टेलीफोन के तारों
से. तब क्या होगा जंगल का, हरियाली का?
क्या होगा उन शक्तिशाली चीलों का? सब ख़त्म हो जाएँगी.
क्या होगा जब तेज़ घोड़ों और शिकार का अंत होगा,
और केवल जिंदा रहने की मात्र कोशिश बची रहेगी.

एक बात हम सब जानते हैं – कि सभी चीज़ें एक-दूसरे से
जुड़ी हैं. इंसान ने नहीं बुना है इस जीवन का ताना-बाना.
वो उसमें सिर्फ एक कमज़ोर सा धागा है.
हमारे साथ भी वही होगा जो हम करेंगे ताने-बाने के साथ.

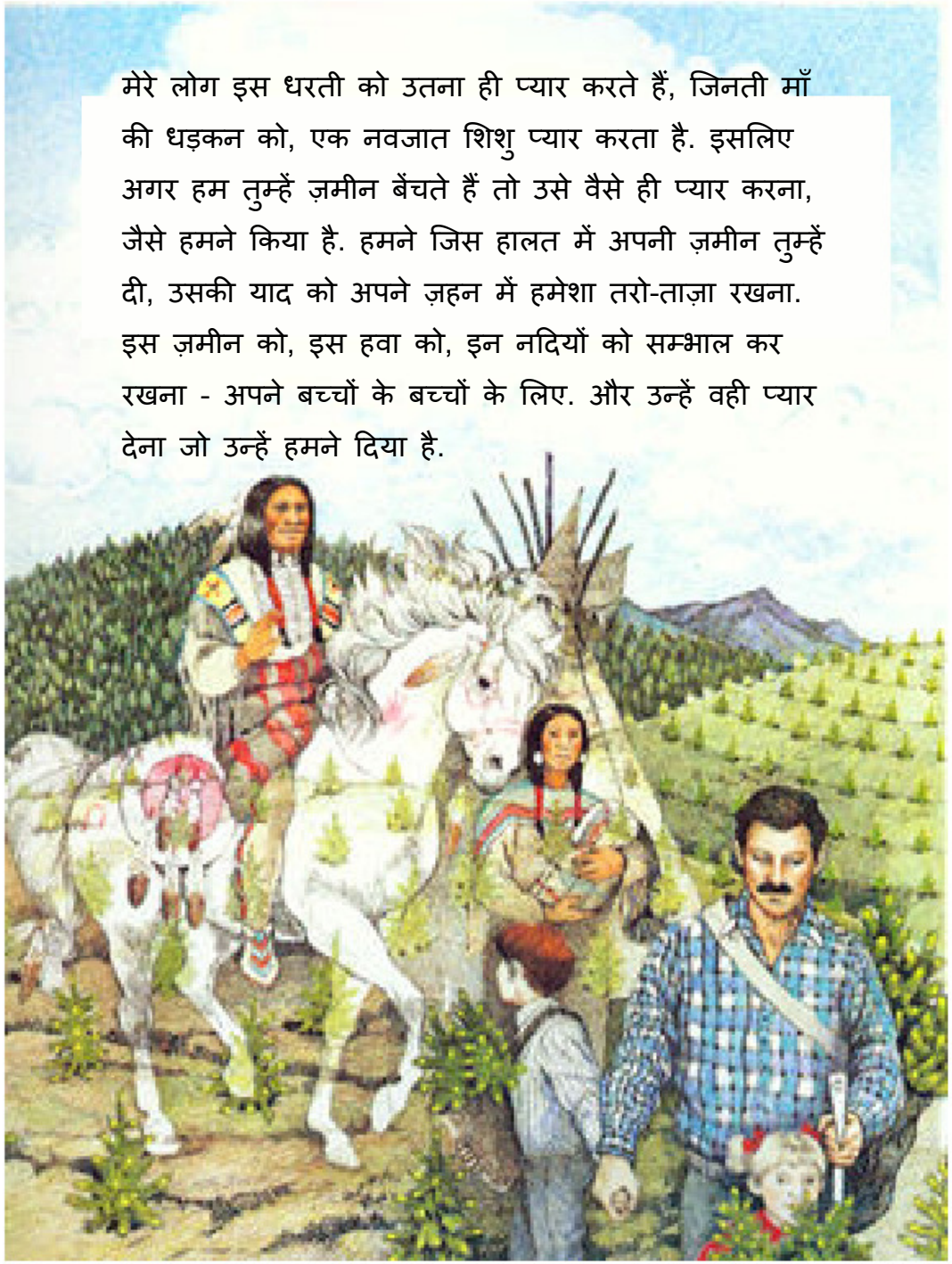

चीफ सीएटल की कहानी अतीत के कोहरे में ज़रूर कुछ धुंधली हुई है. कुछ लोग इसे उनका पत्र मानते हैं, कुछ भाषण. पर यह हर कोई मानता हैं कि चीफ सीएटल मूल अमरीकी जनजातियों के सम्मानित और शांतिप्रिय सरगना थे. 1850 में जब अमरीकी सरकार ने थके और हारे आदिवासियों की ज़मीन खरीदनी चाही तब चीफ सीएटल ने अपनी जुबां में यह भाषण दिया.

अमरीका के मूल लोगों के लिए पृथ्वी का हर हिस्सा, हर जीव पवित्र था. उनकी मान्यता थी कि प्रकृति नष्ट करने से सम्पूर्ण जीवन ही नष्ट हो जायेगा. 150 वर्ष पहले उन शब्दों का अर्थ और मर्म शायद लोगों को समझ में नहीं आया, पर अब उनका अर्थ साफ़ ज़ाहिर है. हमें चीफ सीएटल के शब्दों को गंभीरता से सुनना चाहिए – सूज़न जेफ़्फ़र्स